# वैदिक गीता

(गीता का शुद्ध वैदिक स्वरूप,
आधुनिक दृष्टिकोण के साथ)

आचार्य दीपक

# विषय सूची

**अध्याय 1:** अर्जुन विषाद योग – मोह और धर्मसंकट

**अध्याय 2:** सांख्य योग – आत्मा का ज्ञान और कर्म की अनिवार्यता

**अध्याय 3:** कर्मयोग – निष्काम कर्म और समत्व

**अध्याय 4:** ज्ञान-कर्म-संन्यास योग – ज्ञान और कर्म का संतुलन

**अध्याय 5:** संन्यास योग – संन्यास और कर्मयोग का तुलनात्मक अध्ययन

**अध्याय 6:** ध्यानयोग – मन को वश में करने की कला

**अध्याय 7:** ज्ञान-विज्ञान योग – आध्यात्मिक एवं सांसारिक ज्ञान

**अध्याय 8:** अक्षर-ब्रह्म योग – मृत्यु और मोक्ष का ज्ञान

**अध्याय 9:** राजविद्या राजगुह्य योग – गुप्ततम ज्ञान और भक्ति

**अध्याय 10:** विभूति योग – श्रीकृष्ण की दिव्य विभूतियाँ

**अध्याय 11:** विश्वरूप दर्शन योग – ईश्वर के विराट स्वरूप का दर्शन

**अध्याय 12:** भक्तियोग – प्रेम और भक्ति का महत्व

**अध्याय 13:** क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेक योग – शरीर और आत्मा का भेद

**अध्याय 14:** गुणत्रय विभाग योग – सत्व, रजस, तमस के प्रभाव

**अध्याय 15:** पुरुषोत्तम योग – परम पुरुष का ज्ञान

**अध्याय 16:** दैवासुर संपद विभाग योग – दिव्य और आसुरी गुण

**अध्याय 17:** श्रद्धा त्रिविधा योग – श्रद्धा के तीन प्रकार

**अध्याय 18:** मोक्ष संन्यास योग – अंतिम उपदेश और निष्कर्ष

www.vaidikgurukul.in

# भूमिका

## भगवद गीता का अमर संदेश

भगवद गीता विश्व के सबसे प्राचीन और गहन ग्रंथों में से एक है। यह केवल धार्मिक पुस्तक नहीं है, बल्कि यह जीवन का मार्गदर्शन करने वाली एक महान आध्यात्मिक संहिता है। गीता के श्लोक न केवल अर्जुन को दिए गए उपदेश हैं, बल्कि वे मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए कालातीत मार्गदर्शन हैं। गीता का ज्ञान सार्वभौमिक है और मानवता की किसी भी परिस्थिति में उसका मार्गदर्शन कर सकता है।

गीता का संदेश समय-काल से परे है। इसकी शिक्षाएँ न केवल अर्जुन के युद्धक्षेत्र में उपयोगी थीं, बल्कि यह आज के जीवन की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। यह ग्रंथ कर्मयोग, ज्ञान, भक्ति और ध्यान जैसे जीवन के प्रमुख स्तंभों पर प्रकाश डालता है। इसके प्रत्येक श्लोक में जीवन को गहराई से समझने और उसके विभिन्न अंगों को संतुलित करने का मार्गदर्शन छिपा है।

## आधुनिक जीवन और गीता का महत्व

आज के समय में जीवन अत्यंत जटिल हो गया है। हम सभी कहीं न कहीं किसी प्रकार के मानसिक तनाव, आत्म-संदेह, असफलताओं का भय और भविष्य की अनिश्चितताओं से घिरे हुए हैं। चाहे वह कार्यस्थल की चिंता हो, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हों, या जीवन में सफलता पाने की दौड़ हो—हर परिस्थिति में हमें मानसिक और भावनात्मक संतुलन की आवश्यकता है। ऐसी परिस्थिति में गीता हमें एक गहरे आंतरिक संतुलन का मार्ग दिखाती है, जहाँ से हम अपनी आंतरिक शांति प्राप्त कर सकते हैं।

गीता का सबसे बड़ा उपदेश यह है कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुखों का अर्जन नहीं, बल्कि आत्म-ज्ञान, सेवा, प्रेम और सत्य के मार्ग पर चलना है। इसके सिद्धांत हमें इस भौतिकवादी युग में जीवन की सच्ची परिभाषा से जोड़ते हैं। यह ग्रंथ हमें केवल बाहरी जीवन की समस्याओं का हल नहीं बताता, बल्कि आत्म-ज्ञान, आंतरिक स्थिरता, और परम सत्य का साक्षात्कार कराता है।

## पुस्तक का उद्देश्य और दृष्टिकोण

ऑनलाइन तथा ऑफलाइन माध्यम जितने भी पुस्तक के गीता पर आज हमारे पास उपलब्ध है वे सभी पौराणिक मान्यताओं के आधार पर अर्थ किए गए हैं । यह पुस्तक **"वैदिक गीता"** का उद्देश्य गीता के मूल सिद्धांतों को वैदिक दृष्टिकोण के

साथ आज के युग के परिप्रेक्ष्य में समझाना है। गीता के ज्ञान को आधुनिक जीवन की चुनौतियों के अनुरूप सरल, व्यावहारिक और उपयोगी बनाना इस पुस्तक का प्राथमिक लक्ष्य है। इस पुस्तक में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति और ध्यान जैसे विषयों को आधुनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ जोड़कर समझाने का प्रयास किया गया है।

यह पुस्तक उस पाठक के लिए है जो आत्म-ज्ञान की खोज में है और जो अपने जीवन में स्थिरता और संतुलन प्राप्त करना चाहता है। इसमें गीता के श्लोकों को व्यावहारिक जीवन की स्थितियों के अनुसार व्याख्यायित किया गया है, ताकि कोई भी व्यक्ति उसे आसानी से समझ सके और अपने जीवन में अपना सके।

**पुस्तक की रूपरेखा**

इस पुस्तक में भगवद गीता के उन सिद्धांतों का विवेचन किया गया है, जो हमें सही कर्म, ध्यान, सेवा, और प्रेम का मार्ग दिखाते हैं। हर अध्याय गीता के किसी एक प्रमुख सिद्धांत को आधुनिक जीवन में लागू करने के तरीके को समझाएगा। उदाहरण के लिए, कर्मयोग के सिद्धांतों को हम अपनी नौकरी, रिश्तों और पारिवारिक जीवन में कैसे अपना सकते हैं; भक्ति का मार्ग हमारे मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-स्वीकृति के लिए कैसे सहायक हो सकता है; ज्ञानयोग के सिद्धांत हमें कैसे आत्म-साक्षात्कार की दिशा में ले जा सकते हैं—इन सभी बातों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

**आपके लिए यह पुस्तक क्यों उपयोगी है?**

हममें से हर कोई अपने जीवन में शांति, संतोष और एक संतुलित दृष्टिकोण चाहता है। गीता के ये सिद्धांत हमें रोज़मर्रा की समस्याओं से निपटने में, अपने भीतर की शक्ति को पहचानने में और एक शांतिपूर्ण जीवन जीने में सहायता कर सकते हैं। यह पुस्तक आपको गीता की शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने की प्रेरणा देगी और आपके आत्मिक विकास में सहायक होगी।

गीता का ज्ञान सार्वभौमिक है और इसका उद्देश्य हमें अपने सच्चे स्वरूप की ओर ले जाना है। इस पुस्तक का हर अध्याय आपको इस यात्रा में एक नया दृष्टिकोण और एक नई दिशा देगा।

**जैसा कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा—"हे अर्जुन! अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अपने जीवन में आत्म-ज्ञान, संतुलन, और समर्पण का भाव लेकर आगे बढ़ो।"**

# पाठकों से विशेष अनुरोध

भगवद गीता कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं, बल्कि महाभारत का एक अभिन्न अंग है। समय के साथ शास्त्रों में कई प्रकार की मिलावट हुई, और महाभारत भी इससे अछूता नहीं रहा। महाभारत का प्राचीन नाम **'जय संहिता'** था, जिसमें आरंभ में केवल 8,000 श्लोक थे, जो समय के साथ बढ़ते हुए 1 लाख तक पहुँच गए। इस विस्तार के कारण महाभारत में कई प्रसंगों का स्वरूप परिवर्तित हुआ, जिससे भगवद गीता में भी कुछ प्रसंग-विरोधी एवं वेद-विरुद्ध श्लोकों की मिश्रण दिखाई देता है। इससे गीता का मूल संदेश कहीं न कहीं धुंधला हो गया।

भगवद गीता का आधार उपनिषद हैं, और उपनिषदों की जड़ें वेदों में समाई हुई हैं। स्वयं श्रीकृष्ण ने गीता में अनेकों बार वेदों का उल्लेख किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यदि हमें गीता के वास्तविक संदेश को आत्मसात करना है, तो इसे वेदों के प्रकाश में समझना होगा। वेदों के सिद्धांतों की गहरी समझ के बिना गीता का सार पकड़ पाना कठिन हो सकता है।

इसी आवश्यकता को देखते हुए, मैंने **"वैदिक सनातन धर्म (शंका समाधान)"** नामक पुस्तक लिखी है, जो वेदों के मौलिक सिद्धांतों को सरल भाषा में प्रस्तुत करती है। यदि कोई बिना वेदज्ञान के सीधा भगवद गीता का अध्ययन करता है, तो कई जटिल प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं, जिससे मन में संशय और भ्रम की स्थिति बन सकती है। इसलिए, मेरा विनम्र आग्रह है कि पहले वेदों की शिक्षाओं को समझें, क्योंकि वेद-ज्ञान के अभाव में गीता को पूर्ण रूप से समझना अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

आशा है कि मेरी यह पुस्तक आपके लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

-आचार्य दीपक

# अध्याय 1: अर्जुन विषाद योग

**<u>श्लोक – 1.1</u>**

धृतराष्ट्र उवाच ।
*धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।*
*मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥*

**अर्थ**: धृतराष्ट्र बोले — हे संजय! धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में एकत्र हुए मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया?

**व्याख्या**:

- यह महाभारत के युद्ध का पहला श्लोक है, जिसमें दृष्टिहीन राजा धृतराष्ट्र संजय से पूछते हैं कि युद्धभूमि में एकत्र हुए दोनों पक्षों ने क्या किया। उनका यह प्रश्न केवल युद्ध के विवरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके भीतर के मनोवैज्ञानिक संघर्ष को भी प्रकट करता है।

- **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे :** कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है, क्योंकि यहाँ धर्म और अधर्म के मध्य एक निर्णायक संघर्ष होने वाला है। यह स्थान जीवन के उस क्षेत्र का प्रतीक है, जहाँ हमें अपने भीतर अच्छे और बुरे के बीच निर्णय करना होता है।

- **मामकाः पाण्डवाश्चैव:** इस वाक्य में धृतराष्ट्र द्वारा अपने पुत्रों (कौरवों) और पांडवों में भेदभाव का भाव दिखता है। वे पांडवों को 'अपने' नहीं मानते, और यह भेदभाव उनकी अज्ञानता और मोह को दर्शाता है।

धृतराष्ट्र का प्रश्न यह भी इंगित करता है कि वे अपने पुत्रों के कुकर्मों के प्रति अंधे बने हुए हैं। वे धर्म के स्थान पर अधर्म का साथ देने के लिए मानसिक रूप से तैयार हैं, जो उनके अंधकारमय दृष्टिकोण को दर्शाता है।

**आधुनिक संदर्भ**:

- यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि हमारे जीवन में भी एक ऐसा धर्मक्षेत्र होता है, जहाँ हमें अपने मन के अच्छे और बुरे विचारों के बीच चुनाव करना होता है। जैसे कुरुक्षेत्र में धर्म और अधर्म का संघर्ष होने वाला था, वैसे ही हमारे जीवन में भी कई बार सही और गलत के बीच संघर्ष होता है।

www.vaidikgurukul.in

- धृतराष्ट्र का दृष्टिकोण यह भी सिखाता है कि अपने परिवार या प्रियजनों को उनके दोषों के बावजूद सही मानना, एक प्रकार की अंधता है। इससे जीवन में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे कि अन्याय का समर्थन, निर्णय में भेदभाव और मानसिक अशांति। इसलिए हमें जीवन में कभी भी अन्याय का समर्थन नहीं करना चाहिए चाहे वह कोई भी हो पिता, पुत्र, माता, पत्नी आदि।
- हर व्यक्ति का जीवन एक धर्मक्षेत्र है, जहाँ उसे सही और गलत के बीच में चुनाव करना होता है। इस चुनाव में अंधत्व, मोह और भेदभाव से बचना ही सच्ची बुद्धिमत्ता है। हमें हर परिस्थिति में न्याय का साथ और अन्याय का त्याग करना चाहिए।

---

**श्लोक – 1.2**

सञ्जय उवाच
*दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।*
*आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत्॥*

**अर्थ**: संजय ने कहा — तब दुर्योधन ने पांडवों की सेना को युद्ध के लिए व्यवस्थित देख, अपने गुरु द्रोणाचार्य के पास जाकर उनसे यह बात कही।

**व्याख्या**:

- इस श्लोक में दुर्योधन अपने गुरु द्रोणाचार्य के पास आते हैं, जब वह पांडवों की सेना को युद्ध की तैयारी में व्यवस्थित देखता है। यह श्लोक बताता है कि दुर्योधन, जो कौरवों का नेता है, अपनी सेना की तुलना में पांडवों की सेना की रणनीति को देखकर चिंतित है।
- यहाँ से महाभारत का युद्ध आरंभ होने की स्थिति में पहुँचता है, जहाँ दुर्योधन की मनःस्थिति को दर्शाया गया है। वह अपने गुरु के पास जाकर अपनी चिंताओं को प्रकट करना चाहता है, जो दर्शाता है कि उसके मन में एक भय और असुरक्षा का भाव है।

www.vaidikgurukul.in

**आधुनिक संदर्भ**:

- इस श्लोक से हमें यह सिखने को मिलता है कि जब हम किसी चुनौती या समस्या का सामना करते हैं, तो हमें भी किसी योग्य व्यक्ति से मार्गदर्शन लेना चाहिए।
- दुर्योधन का अपने गुरु के पास जाकर मार्गदर्शन लेना यह दर्शाता है कि हमारे जीवन में भी गुरु या मार्गदर्शक का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि हम अपनी चिंताओं का समाधान पा सकें। सही मार्गदर्शन हमें मानसिक स्थिरता देता है। किसी योग्य मार्गदर्शक का सहारा लेना न केवल हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि हमारी दृष्टि को भी स्पष्ट करता है।

---

**श्लोक – 1.3**

*पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।*
*व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥*

**अर्थ**: दुर्योधन ने कहा: आचार्य (द्रोणाचार्य), पांडु पुत्रों की इस विशाल सेना को देखिए, जो आपके बुद्धिमान शिष्य द्रुपद के पुत्र (धृष्टद्युम्न) द्वारा व्यवस्थित की गई है।

**व्याख्या**:

- इस श्लोक में दुर्योधन अपने गुरु द्रोणाचार्य का ध्यान पांडवों की सेना की ओर आकर्षित करता है, जो धृष्टद्युम्न द्वारा व्यवस्थित की गई है। यहाँ दुर्योधन का दृष्टिकोण द्वंद्व से भरा हुआ है; एक ओर वह पांडवों की शक्ति का बोध कर रहा है, और दूसरी ओर वह अपने गुरु की असहजता को भी भड़का रहा है, क्योंकि धृष्टद्युम्न उनके ही शिष्य हैं।
- दुर्योधन की यह बात उसके मन में छिपे हुए भय, जलन और असुरक्षा को दर्शाती है। वह द्रोणाचार्य को स्मरण कराता है कि यह सेना उनके ही शिष्य द्वारा तैयार की गई है, जो उनके ही शत्रु (द्रुपद) का पुत्र है।

**आधुनिक संदर्भ**:

- इस श्लोक का यह संदेश है कि हमारे जीवन में भी कई बार हम अपने अहंकार या भय के कारण दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं।

www.vaidikgurukul.in

दुर्योधन जैसे लोग अपनी समस्याओं के लिए दूसरों को दोषी ठहराने का प्रयत्न करते हैं, जबकि वास्तव में उन्हें अपनी असुरक्षाओं का सामना करना चाहिए।

- यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि प्रतिस्पर्धा के क्षणों में, हमें अपनी असुरक्षा को दूर रखते हुए आत्म-विश्वास से आगे बढ़ना चाहिए। आत्म-जागरूकता और सकारात्मक दृष्टिकोण ही सच्ची शक्ति का आधार है। दूसरों की सफलता से प्रभावित होकर स्वयं को कमतर समझने के स्थान पर हमें अपनी असुरक्षाओं का सामना करना चाहिए।

---

**श्लोक – 1.4**

*अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।*
*युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः॥*

**अर्थ**: यहाँ (पांडवों की सेना में) कई महान योद्धा हैं, जो युद्ध में भीम और अर्जुन के समान पराक्रमी हैं; जैसे कि युयुधान (सात्यकि), विराट और महारथी द्रुपद।

**व्याख्या**:

- इस श्लोक में दुर्योधन पांडवों की सेना के उन योद्धाओं का उल्लेख करता है, जो भीम और अर्जुन जैसे महान योद्धाओं के समान पराक्रमी हैं। यहाँ सात्यकि, विराट और द्रुपद जैसे महारथियों का नाम लेकर वह अपनी सेना के सामने उनके साहस और शक्ति को पहचानता है।
- दुर्योधन के ये शब्द उसकी मानसिक स्थिति को और अधिक स्पष्ट करते हैं—वह पांडवों की सेना को अपनी सेना से अधिक शक्तिशाली मानता है। यह उसकी आंतरिक कमजोरी और संदेह को प्रकट करता है।

**आधुनिक संदर्भ**:

- यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि जब हम किसी कठिन परिस्थिति का सामना कर रहे हों, तो आत्म-विश्वास और साहस बनाए रखना आवश्यक है। अपनी सीमाओं को पहचानते हुए हमें अपने प्रतिद्वंद्वी की क्षमता का भी सम्मान करना चाहिए।

www.vidikurukul.in

- इस श्लोक से हम यह भी सीख सकते हैं कि दूसरों की शक्ति का आकलन करना हमें सचेत और सतर्क बनाता है। हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि किसी भी परिस्थिति में अति-आत्मविश्वास (over confidence) नहीं, बल्कि संतुलन का भाव रखना चाहिए। आत्म-आलोचना और सतर्कता, सफलता प्राप्त करने में सहायक होती हैं।

---

**<u>श्लोक – 1.5</u>**

*धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।*
*पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥*

**अनुवाद**: पांडवों की सेना में धृष्टकेतु, चेकितान, वीर्यवान काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज और महाबली शैब्य जैसे श्रेष्ठ राजा भी शामिल हैं।

**व्याख्या**:

- दुर्योधन यहाँ पांडवों की सेना के कुछ और वीर योद्धाओं का उल्लेख करता है। धृष्टकेतु, चेकितान, काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज और शैब्य सभी महारथी हैं, जो युद्ध में विशेष स्थान रखते हैं।
- दुर्योधन का यह वर्णन उसकी चिंता को और अधिक स्पष्ट करता है। वह पांडवों की सेना की शक्ति को देखता है और उसके कारण मन में एक प्रकार का भय अनुभव करता है।

**आधुनिक संदर्भ**:

- यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें पूरी तैयारी करनी चाहिए। जैसे दुर्योधन ने पांडवों की सेना का विश्लेषण किया, वैसे ही हमें भी अपनी कठिनाइयों और चुनौतियों को समझकर उनके लिए योजना बनानी चाहिए।
- यह श्लोक यह भी संकेत करता है कि अपने विरोधियों की ताकत को पहचानना और उनसे सीखना हमें अधिक सक्षम बनाता है।

---

www.vaidikgurukul.in